IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 2, Issue 1, November 2022
Impact Factor: 6.252

माखनलाल चतुर्वेदी की समग्र राष्ट्रीय विचारधारा

'विनोद दुबे', 'डॉ. प्रेमशंकर शुक्ला'
अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रीवा (म.प्र.)
प्राध्यापक, हिन्दी विभाग, एस. आर. पी. कालेज, हनुमना, रीवा (म.प्र.)

सारांश –

भारत के स्वतंत्रता संग्राम में साहित्यकारों ने भी अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका अदा की थी। उन्होंने अपनी लेखनी की धार से स्वतंत्रता संग्राम को एक नया स्वर दिया और इसमें माखनलाल चतुर्वेदी जी का नाम अत्यंत आदरणीय है। उनकी विचारधारा पूर्णतः राष्ट्र के प्रति समर्पिप थी। उनका सपना समग्र भारत एक का था। पण्डित जी ने अपनी लेखनी और क्रान्तिकारी विचारधारा से देशवासियों के हृदय में राष्ट्र–प्रेम की गंगा प्रवाहित करने का भरसक प्रयास किया था। वे देश के एक सच्चे राष्ट्रभक्त थे।

शब्द कुंजी : माखनलाल चतुर्वेदी, राष्ट्रीय विचारधारा

सन्दर्भ–सूची

1. 'माखनलाल चतुर्वेदी रचनावली खण्ड–10 हिन्दी दिग्दर्शन', संपादक श्रीकान्त जोशी, पृष्ठ7
2. 'कैदी और कोकिला', माखनलाल चतुर्वेदी, ूणंअपजांवींण्वतह
3. 'माखनलाल चतुर्वेदी रचनावली खण्ड–10', संपादक श्रीकान्त जोशी, कर्मवीर 20 जून 1925, पृष्ठ 35
4. 'माखनलाल चतुर्वेदी रचनावली खण्ड–10', संपादक श्रीकान्त जोशी, कर्मवीर 20 जून 1925, पृष्ठ 35
5. 'माखनलाल चतुर्वेदी रचनावली खण्ड–2', संपादक श्रीकान्त जोशी, कर्मवीर 1913, पृष्ठ 23
6. 'माखनलाल चतुर्वेदी रचनावली खण्ड–2', संपादक श्रीकान्त जोशी, कर्मवीर 1914, पृष्ठ 26
7. 'माखनलाल चतुर्वेदी रचनावली खण्ड–2', संपादक श्रीकान्त जोशी, प्रभा 1914, पृष्ठ 27
8. 'माखनलाल चतुर्वेदी रचनावली खण्ड–2', संपादक श्रीकान्त जोशी, पृष्ठ 22